अचानकमार टाइगर रिज़र्व में ब्लैक पैंथर

चर्चा में क्यों

हाल ही में **छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले** के **अचानकमार बाघ अभयारण्य (ATR)** में एक दुर्लभ ब्लैक पैंथर देखा गया।

मुख्य बिंदु

वर्ष 2022 में बाघों की गणना के दौरान ATR में ब्लैक पैंथर की मौजूदगी की पुष्टि हुई थी।

ATR में **बाघों की गणना के लिये सर्वेक्षण के चौथे चरण** में रिज़र्व वन में **दस बाघों की उपस्थिति** दर्ज की गई थी, जिनमें से **सात मादा और तीन नर** थे।

ब्लैक पैंथर

//

- **परिचय:**
  - तेंदुए *(Panthera Pardus)* का रंग हल्का होता है (हल्के पीले से अत्यंत सुनहरे या पीले रंग के) और इसके शरीर पर काले रंग के गुच्छे में फर/बाल पाए जाते हैं।
  - **मेलानिस्टिक तेंदुए** का रंग या तो **पूरी तरह से काला** होता है या फिर यह **अत्यंत गहरे रंग** का होता है जो ब्लैक पैंथर के रूप में जाने जाता है। यह **धब्बेदार भारतीय तेंदुओं की रंग आधारित किस्म** है, जो **दक्षिण भारत के घने वनों में पाया जाता है।**
  - तेंदुओं के **काले रंग के आवरण का कारण अप्रभावी एलील** (Recessive Alleles) और जगुआर के एक प्रभावी एलील की उपस्थिति का होना है। प्रत्येक प्रजाति में एलील्स का एक निश्चित संयोजन **जंतु के फर और त्वचा में बड़ी मात्रा में काले वर्णक मेलेनिन (मेलानिज़्म) के उत्पादन** को उद्दीपित करता है।
    - काले आवरण की उपस्थिति **अन्य कारकों से प्रभावित हो सकती है, जैसे कि आपतित प्रकाश का कोण** और जंतु के जीवन की अवस्था।

- **पर्यावास:**
    - ये मुख्य रूप से **दक्षिण-पश्चिमी चीन, बर्मा, नेपाल, दक्षिणी भारत, इंडोनेशिया** और **मलेशिया** के दक्षिणी भाग में पाए जाते हैं।
    - भारत में यह **कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र** आदि राज्यों में पाया जाता है।
- **संबंधित खतरे:**
    - प्राकृतिक वास का नुकसान।
    - वाहनों से टक्कर।
    - रोग।
    - मानव अतिक्रमण।
    - अवैध शिकार।
- **संरक्षण स्थिति:**
    - **IUCN रेड लिस्ट**: सुभेद्य (Vulnerable)
    - **CITES**: परिशिष्ट I
    - **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972**: अनुसूची I

अचानकमार टाइगर रिज़र्व

- यह छत्तीसगढ़ के **बिलासपुर ज़िले** में स्थित है। इसकी **स्थापना 1975** में की गई और **2009 में इसे बाघ अभयारण्य घोषित किया गया**।
- यह बृहद **अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिज़र्व** का हिस्सा है।
- इसमें **कान्हा और बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व को जोड़ने वाला एक गलियारा** मौजूद है और यह इन रिज़र्वों के बीच बाघों के आवागमन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **नदी:**
    - इस रिज़र्व के ठीक बीच से **मनियारी नदी** बहती है, जो इस वन की जीवन रेखा है।
- **जनजाति:**
    - यहाँ बैगा जनजाति की बहुलता है, जो वन में वास करने वाला जनजाति समुदाय है जिसे **"विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTG)"** के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
    - रिज़र्व के प्रमुख क्षेत्र के 626 हेक्टेयर में 25 गाँव हैं, जिनमें से लगभग 75% जनसंख्या **बैगा जनजाति** की है।
- **वृक्ष:**
    - इसके अधिकांश क्षेत्र में **उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वृक्ष** विस्तृत हैं।
- **वनस्पतिजात:**
    - **साल, बीजा, साजा, हल्दू, सागौन, तिनिसा, धावरा, लेंडिया, खमर, बाँस** सहित औषधीय पौधों की 600 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- **प्राणिजात:**
    - इसमें **बाघ, तेंदुआ, बाइसन, उड़न गिलहरी, इंडियन जायंट स्क्विरल, चिंकारा, वन्य कुत्ता, लकड़बग्घा, सांभर, चीतल** और पक्षियों की 150 से अधिक प्रजातियाँ शामिल हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/black-panther-in-achanakmar-tiger-reserve